IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 10, 2022

भारतीय संगीत के प्रचार–प्रसार में संतवाणी का योगदान

डॉ. सौरभ वर्मा
सहायक प्रोफेसर
संगीत विभाग,
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय,
रोहतक (हरियाणा)
Email : saurabhsitar1@gmail.com

शोध आलेख सार :

भारतीय संगीत के समग्र विकास एव प्रचार प्रसार हेतु अनेकों शैलियां, सिधान्तों आदि का महत्वपूर्ण योगदान रहा परन्तु इन समस्त भक्ति 'संगीत की 'शैलियों के अतिरिक्त संतवाणी का योगदान अति शोभनीय है। संतो की वाणी अथवा रचनाओं ने संगीत की महत्वता को मानव हृदय में एक निर्मल स्थान प्रदान किया। ब्रह्माण्ड की समस्त संत परम्परा ने अपनी मधुर वाणी से संगीत की, शोभा बढ़ाई है। इस संतवाणी परम्परा में अधिकतर 15वीं शताब्दी के संतो की वाणियों ने संगीत को एक विशेष पहचान प्रदान की है। इसी काल को 'मध्यकाल' अथवा 'भक्तिकाल' की संज्ञा प्राप्त हुई है। भक्ति काल के इन समग्र सन्तों जैसे कबीर दास, मीराबाई, रविदास, गुरु नानक देव, नामदेव आदि ने अपनी रचनाओं अथवा वाणी के माध्यम से मानव के हृदय में ज्ञान रुपी ज्योति को जगाने का प्रयास किया है। इनकी समस्त रचनाएँ संगीत की मधुर एवं मार्मिक धुनों पर आधारित हैं।

मुख्य शब्द : संतवाणी, प्रचार–प्रसार, मध्यकालीन संत, भारतीय संगीत।

साधू संत, फक्कड़ फकीरों की जिस भाषा को प्रत्येक मानव तक पहुँचाना कठिन माना जाता था, उसी भाषा को संगीत के माध्यम से मानव हृदय तक पहुँचाया गया। इस बात पर कोई संदेह करने के आवश्यकता नही है कि 'संतवाणी' माध्यम से संगीत का प्रचार–प्रसार अधिक मात्रा में हुआ है।

जो रचनाएँ 'गुरु ग्रंथसाहिब', 'कबीर' बीजक', 'रामचरित मानस' आदि 'अनेको' ग्रन्थों में संकलित थी उन रचनाओं को लय, स्वर तालबद्ध कर गुणिजनों ने मानव हृदय को उपहार स्वरूप भेंट किया है जो सदा–सदा तक नाद द्वारा श्रवणोपयोगी होगा।

संत कबीर दास की वाणी में संगीत

संत कबीरदास ने 15वीं शताब्दी में अपने अनुभव एवं सत्यता का प्रचार–प्रसार किया संत कबीर दास के इन्ही वचनों अथवा शब्दों को संगीतज्ञों ने अपने स्वर माधुर्य से श्रोताओं के समक्ष प्रस्तुत किया। संत कबीर दास की रचनाओं में कुल पन्द्रह रागों का प्रयोग किया है, जिनमें श्री राग (सीरी रागु), सूही राग, गौड़ राग, बिलावल राग, गौड़ी राग, रामकली राग, कैदार राग, बसन्त राग, प्रभाती राग, भैरव राग आदि प्रमुख रूप से प्रयोग किए गए हैं। इसके अतिरिक्त राग, देश, राग शिवरंजनी आदि का भी प्रयोग अधिक मात्रा में हुआ है।[1] संत कबीर कृत एक वाणी इस प्रकार हे –

चदरिया झीनी रे झीनी
के राम रंग रस भीनी चदरिया
जब मौरी चादर बुन घर आई,
रंगरेज को दीनी ऐसा रंग रंगा रंगरे ने
लालो लाल कर दीनी
चदरिया झीनी रे झीनी।[2]

इस सतं वाणी में सुप्रसिद्ध भाजन गायक अनूप जलोटा ने राग 'देश' के स्वरों प्रयोग किया है। संगीत के प्रसिद्ध राग देश को इस रचना के द्वारा विशेष' पहचान प्राप्त जिसे बिना राग के ज्ञाता भी भलिभांति समझने लगे।

इसी श्रृंखला में संत कबीर की एक रचना – 'बीत गए दिन भजन बिना रे।' तथा 'ए तन धन की कौन बड़ाई', में राग बैरागी भैरव के स्वरों 'प्रयोग हुआ है।

 © 2012 IJFANS. All Rights Reserved,

गुरू नानक देव की संत वाणी में संगीत

संत गुरु नानक देव की वाणियों में संगीत कूट–कूट कर भरा हुआ है। 'गुरु ग्रंथ साहिब' ग्रंथ वाणी लय, स्वर एवं तालबद्ध है। इसमें मुख्यतः तेरह रागों का प्रयोग हुआ जिनका वर्णन गुरु ग्रंथ साहिब में दिया गया है। इस श्रृंखला में एक गुरु वाणी जिसे जोगिन्दर सिह रागी ने बहुत ही मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है।

रागीयों द्वारा प्रस्तुत की गई अमृत वाणी से संगीत को और भी अधिक प्रतिष्ठा प्राप्त हुई है। इसक ग्रंथ की अनेक रचनाएं जैसे –

- सांस, सांस, सिमरों गोबिन्द
- कर कृपा तेरे गुण गावां
- गुरू नानक अमृतवाणी
- कोई बोले राम राम
- ऐसी मरनी जो मरे आदि इन सभी वाणियों में संगीत की समधुर ध्वनियों का प्रयोग किया गया है।

मीराबाई की रचनाओं में संगीत

मीराबाई की रचनाओं में अधिकतर प्रेम प्रसंग की छंदकारी तथा विरह रस का प्रयोग हुआ है। इनमें एक प्रसिद्ध रचना इस प्रकार है जो भिन्न–भिन्न रागों में गाई जाती है–

हेरी मैं तो प्रेम दीवानी
मेरा दर्द ना जाने कोई।
घायल की गति घायल जाणे
जो कोई घायल होय
जोह की गति जौहरी जाणे,
जै कोइ जौहरी होय ।[3]

इसके अतिरिक्त एक अति प्रचलित भजन है, जिसमे गायन से फिल्म संगीत में भी नई रोशनी उत्पन्न हुई है –

पायो जी मैंने राम रतन धन पायो।
वस्तु अमौलिक दी मेरे सतगुरु, कर कृपा अपनायो
खर्च ना टूटे चौर ना लूटे, दिन–दिन बढ़त सवायों
पायो जी मैंने राम रतन धन पायो।[4]

संत रविदास की वाणी में संगीत

संत रविदास जी, ने संत कबीर दास की भांति ही चेतावनी एवं गुरु महिमा वाणियों की लेखनी अधिक की थी। इनकी रचनाएं भी संगीत की कठिन धुनों में समाहित है। इनकी रचनाओं में विशेषकर शुद्ध प्रकृति के रागों तथा चतस्तरे तालों का प्रयोग हुआ है। संत रविदास की वाणियों के माध्यम से संगीत रेडियों, दूरदर्शन अथवा सिनेमाघरों तक भी अपना परचम लहरा कर आया है। इनकी एक रचना जिसमें कहरवा ताल में राग आशावरों की धुन पर यह रचना इस प्रकार है –

अब नही छूटेगी, मोहे नाम रटन लागी
प्रभु तुमः चन्दन हम पानी, जैसे अमृत बूंद समानी,
प्रभु तुम घनवन हम मोरा, जैसे चितवक चांद चकौरा,
प्रभु तुम मोती हम धागा, जैसें सोने मिला सुहागा,
प्रभु तुम स्वामी हम दासा, जैसे भक्ति करे रविदासा।[5]

इस रचना ने श्रोताओं के हृदय में एक विशेष जगह बनाई है तथा एक अमिट छाप छोड़ी है।

भारतीय संगीत के प्रचार प्रसार में भिन्न–भिन्न गायकों की संतवाणी की भूमिका

भारतीय संगीत को विदेशों तक पहुंचाने के लिए सर्वाधिक भूमिका गायकों की रही है। इन्ही के द्वारा सरहदों के उस पार भी संतों की वाणी का गमन हुआ है। उनके द्वारा

गाई संतवाणी ने विदेशियों के हृदया में भक्ति भावना को उकेरित किया है। संत वाणी की धारा में संगीत को उच्च शिखर तक ले जाने के लिए मुख्य रूप से तीन प्रकार के गायको, वादकों का अहम योगदान है जिनका विवरण निम्नलिखित है–

शास्त्रीय गायकों द्वारा संत वाणी के माध्यम से संगीत का प्रचार–प्रसार

इस परम्परा में भारतीय संगीत अथवा शास्त्रीय संगीत के अनेको गायकों का विशेष योगदान है जैसे पं. भीमसेन जोशी द्वारा गाई सुप्रसिद्ध रचना –

नाम जपन क्यूं छोड़ दिया
असल वचन क्यूं छोड़ दिया।[6]

पं० भीमसेन जोशी द्वारा ही गाई एक और विश्वविख्यात रचना है –

गुरु बिन कौन बतावे बात।
बड़ा विकट रमघाट।।[7]

इस रचना में करुण रस की प्रधानता है गम्भीर प्रकृति के के राग का प्रयोग किया गया है। संगीत प्रचार में पं. भीसेन जोशी की सतं वाणी का योगदान अमूल्य है। किशोरी अमोनकर द्वारा ने मनुष्य को यह ही किया है कि गाई संत वाणी बताने का कार्य प्रत्येक जीव के घट में ही पछी बैठा हुआ है। इस रचना में ताल, दीपचन्दी की मनमोहक झलक सुनने को मिलती है ? इस रचना के बोल हैं –

घट में पंछी बोलता है
आप ही डाडी आप तराजू आप ही बैढ़ा तौलता है।
आप ही माली आप बगीचा, आप ही कलियां तोड़ता हैं।
सब के मन में आप विराजे, जड़ चेतन में डोलता है।
कहत कबीर सुनो भाई साधों, मन की घुण्डी खोलता है। [8]

इन उपरोक्त के अतिरिक्त पं कुमार गंधर्व ने अपनी मधुर, संतवाणी के माध्यम से संगीत जगत में भरपूर प्रचार प्रसार किया है–

इनके द्वारा गाई अनेक संतवाणी आज भी श्रोताओं के कानों में गूंजती रहती हैं जैसे –

- उड़ जाएगा हंस अकेला,
  जग, दो, दिन मैला।
- निर्भय निर्गुण गुण रे गाऊँगा।
- राम निरंजन, न्यारा रे।
- सुनता है, गुरु ज्ञानी।
- सांबरे आ जाइयो।
- अवधूता, कुदरत की गत न्यारी।
- गुरु जी जहाँ बैठूं, वहीं छाया जी।[9]

सुगम संगीत के गायकों द्वारा संत वाणी के माध्यम से संगीत का प्रचार प्रसार

सुगम संगीत के अनेकों कलाकारों ने अपनी मधुर वाणी के द्वारा संगीत का प्रचार–प्रसार किया है। जैसे – कुमार विशु ने अपने स्वर, माधुर्य में कबीर अमृतवाणी भाग–1 में 108 कबीर दोहे संग्रहीत किए हैं, जैसे –

बुरा जो देखन में चला बुरा ना मिलिया कोई

- जो मन खोजा आपना, मुझसे बुरा ना कोई।[10]
- यही धरे रह जाएंगे, कोठी महल मकान।[11]
- कभी प्यासे को पानी पिलाया नही।[12]
- भला किसी का कर ना सको तो।[13]

इसी श्रृंखला में अंतर्राष्ट्रीय भजन गायक अनूप जलोटा, मदन गोपाल, जगजीत सिंह, देवाशीष दास आदि की वाणियों ने भी संगीत का प्रचार–प्रसार ख्याति प्राप्त की।

लोक संगीत के गायकों द्वारा सतं वाणीयों के माध्यम से संगीत का प्रचार–प्रसार

लोक गायकों ने अपनी लोक गायन शैली के माध्यम से सतं वाणी का गुणगान किया है। इनकी इस अनूठी गायन शैली ने देश–विदेशों में भी भारतीय संगीत का प्रचार–प्रसार किया है।

भारतीय संगीत के प्रचार–प्रसार में अनेक लोक गायकों ने अपना योगदान दिया है जैसे पद्म श्री प्रहलाद सिंह, टिपान्या, कालूराम, बामनिया, शबनम विरमानी, भंवरी देवी, मूर्रालाल, अरुण गोयल, प्रकाश गांधी, महेशाराम मेघवाल, तारासिंह डोडवे, ममता जोशी, स्वामी रामानन्द, नीरज आर्य आदि।

प्रहलाद सिंह टिपान्या द्वारा गाई एक रचना–

- इनका भेद बता मेरे अवधू, अच्छी करनी करले तू
  डाली फूल जगत के मांही, जहाँ देखूं वहाँ तू का तू।
- सुनता नही धुन की ख़बर, अनहद का बाजा बाजता।
- लाख लाख वंदन तमने कोटी कोटी वंदन।
- जरा हल्के गाड़ी हांको, मोरे राम गाड़ी वाले।
- होशियार रहणा रे नगर में चौर आवेगा।
- गुरु तो मिले ब्रह्मज्ञानी, हमने पा लैई नाम निशानी।[14]

इनके अतिरिक्त प्रकाश गांधी ने राग शिवरंजनी पर आधारित एक रचना पर गायन किया है, जैसे –

मन नेकी करले, दो दिन का मेहमान

यह रचना 'सम्पूर्ण भारत में प्रचलित इनकी अन्य रचनाएँ भी है जो संगीत का प्रचार–प्रसार में अपनी पहचान बना रही है। जैसे –

गुरू थारे बिना, बिगड़ी ने कौन सुधारें
चलो रे मनवा यहाँ नही रहना
क्या लेके आया बंदे, क्या लेके जाएगा

नबजिया वैद्य क्या देखे, हमे दिल की बिमारी है
जागृत रहणा रे नगर में चौर आवेगा
सतगुरु हैं रंगरेज, चुनर मौरी रंग डाली
निंदां बेच दयूं कोई ले तो
सतगुरू सतगुरु बोल तेरा क्या लगे है मोल।[15]

इस प्रकार संगीत अथवा भारतीय संगीत के प्रचार–प्रसार संतवाणी का अहम योगदान रहा है। यह योगदान अमर है, जो मानव हित में सदैव प्रवाहित होता रहेगा।

संदर्भ ग्रन्थ

[1] चतुर्वेदी, आचार्य परशुराम, कबीर साहित्य की परख, पृ 254–255

[2] दहन, लालचन्द, बीजक, रमैनी, पृ० 41

[3] bhajanganga.com

[4] अनूप जलौटा के साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी से संकलित

[5] अब नही छूटेगी, Lyricspandit.blogspot.com. "सतनाम सत्संग अहमदाबाद' द्वारा साक्षात्कार गायन रचना 11 मई 2017

[6] http://www.bhajandairy.com

[7] घट घट में– किशोरी अमोनकर, Youtube Kighari Amonkar 01.08.1998

[8] गुरु बिन कौन बतावे, Youtube. Bhimsen Joshi Tobac 01.01.1998

[9] youtube. Pt. Kumar Girdhar bhajan

[10] कबीर अमृतवाणी youtube

[11] youtube ज्ञानकाणी भाग–1, कुमार विशु

[12] youtube Kabhi Pyase Ko, Kumar Vishu

[13] youtube Bhala kisi ka, Kumar Vishu

[14] प्रहलाद सिंह टिपान्या official youtube chanal

[15] youtube PMC Rajasthani Parkash Gandhi Bhajan